श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

(९)

शहर फरवरी-२०२२

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	मोहनीय कर्म
(२)	वीर पुरुष
(३)	अर्गला
(४)	निर्भयता
(५)	शतपदी
(६)	नरक गति
(७)	नपुंसक वेद
(८)	शुद्ध आत्मद्रव्य
(९)	हरिकेशी मुनि
(१०)	करवत
(११)	समुच्छिन्न क्रिया अनिवृत्ति
(१२)	गति - आगति
(१३)	श्रमण संघ
(१४)	सूक्ष्म कायायोग
(१५)	आत्म - कल्याण
(१६)	सम्यग् दर्शन
(१७)	नवपद
(१८)	अभयसिंह सूरि
(१९)	शैलेशीकरण
(२०)	अंतराय कर्म

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	कुल मद
(२)	~~श्री~~ शांतिनाथ प्र०
(३)	गारुडी
(४)	त्रिभाग न्यून
(५)	पाप
(६)	व्यापक विद्याव्यासंग
(७)	अ, इ, उ, ऋ, ऌ
(८)	दुर्लभ
(९)	विकलेन्द्रिय
(१०)	नाना विसल
(११)	भव्य उपासकों को
(१२)	मनुष्य
(१३)	वेदनीय कर्म
(१४)	दशार्णभद्र राजा
(१५)	संघ नरेन्द्र
(१६)	तुम जय पाओ
(१७)	चार प्रकार के
(१८)	एक
(१९)	तुझे
(२०)	इसलिये

(५) बहुतेर / बहत्तर
(६) स्त्री
(७) वेद
(८) अनुरक्त
(९) आपवाने माटे
(१०) जाने जाते हैं
(११) पशुओं
(१२) विकलेन्द्रिय
(१३) क्षेम
(१४) लक्ष्मी
(१५) स्थावर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	तेरह
(२)	स्थिरता
(३)	देनेवाली
(४)	निरुपद्रवता

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	४
(२)	१०	(७)	१
(३)	८	(८)	५
(४)	२	(९)	७
(५)	९	(१०)	३

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	९३
(२)	९००
(३)	९
(४)	८
(५)	८
(६)	८
(७)	९६०००
(८)	४
(९)	२४
(१०)	८२

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	८
(२)	×	(२)	२
(३)	✓	(३)	२०
(४)	×	(४)	९९
(५)	✓	(५)	९४
(६)	×	(६)	४
(७)	✓	(७)	९८
(८)	✓	(८)	७
(९)	×	(९)	५
(१०)	✓	(१०)	९३

प्रश्न-१ मिले हुए गुण		प्रश्न-२ मिले हुए गुण		प्रश्न-३ मिले हुए गुण		प्रश्न-४ मिले हुए गुण		प्रश्न-५ मिले हुए गुण		प्रश्न-६ मिले हुए गुण		प्रश्न-७ मिले हुए गुण		प्रश्न-८ मिले हुए गुण		कुल गुण
	+		+		+		+		+		+		+		=	

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

(९) शब्दार्थ – देने के लिये

प्रश्न - ८

१. तेउकाय, वायुकाय की गति पृथ्वीकायादि नौ पदों में होती है। पृथ्विकायादि दस स्थानक के जीवों की गति विकलेन्द्रिय के तीन दंडक में होती है। गर्भज तिर्यंचो की गति, आगति सब दंडको में होती है। सब दंडको से सब जीव गर्भज तिर्यंच गति में जाते है। वैसे ही गर्भज तिर्यंच जीव सब दंडको में उत्पन्न होते है। गर्भज मनुष्य सब दंडको में उत्पन्न होते है, पर तेउकाय, वायुकाय के जीव मनुष्यों में नहीं जाते। विकलेन्द्रिय तीन दंडक की गति पृथ्वीकायादि दस पदों में होती है। तेउकाय, वायुकाय का गमन पृथ्वीकाय आदि नवपद के बारे में होता है।

२. निर्भयता और क्षेम देनेवाली हे देवी! तुम जलभय में से, अग्निभय में से, विषधर भय में से दुष्टग्रह भय में से, राजभय में से, राक्षस के उपद्रव में से, मरकी के उपद्रव में से, चोर के उपद्रव में से, इति संज्ञक उपद्रव में से, शिकारी ~~अद्रुद्ध~~ पशुओं के उपद्रव में से, और भूत, पिशाच तथा शाकिनीओं के उपद्रव में से रक्षण कर, रक्षण कर। उपद्रव रहित कर, शांति कर, तुष्टि कर, पुष्टि कर, क्षेम कर क्षेम कर हे भगवति! हे गुणवति, तुम यहाँ लोगो को निरुपद्रवता, शांति, तुष्टि, पुष्टि और क्षेम कर क्षेम कर।

३. पुण्य और पाप के उदय से सफलता और निष्फलता में अटका हुआ हमारा जीवन कभी निष्फलता से हताश होता है तो कभी सफलता से अभिमान में अकड जाता है। पर उसे स्वप्न में भी ख्याल नहीं आता की पुण्य द्वारा प्राप्त हुई वस्तु का अभिमान करने से मद करने से भवांतर में वो ही वस्तु दुर्लभ बन जाती है मील भी जाय तो तुच्छ मीलती है। पुण्य के उदय से रूप, ऋद्धि, लब्धि, ज्ञान, मिल जाता है, सिर्फ मिल जाने से खुश नहीं होना है वस्तु को प्राप्त करने के बाद उसे बचाने की ताकत जरूरी है। जयवंता जिनशासन पाकर भी जो मद में फसे वो सब पाकर भी हार गये। जीवन में हमे क्या मिला यह महत्त्व का नहीं है जो मिला उसके द्वार आत्मकल्याण कितना साधा। यह सोचने योग्य है। मद के कुल ८ प्रकार है।

४. सुक्ष्म काय योग रूप क्रीया की सर्वथा निवृत्ती होती है। वह ध्यान समुच्छिन्न क्रियानिवृत्त कहलाता है। ~~सुक्ष्मकाय~~ अयोगी गुणस्थानक का सुक्ष्मकाय योग है, फीर भी वह अयोगी कहलाता है क्योकी वहाँ काययोग की अतिसूक्ष्मता है। यह सुक्ष्मकाय योग कार्य का साधन बनने में असमर्थ है। उस का जल्दी ही नाश होने वाला है। शरीर होने से अथवा सूक्ष्म काययोग का आश्रय करने पर भी ध्यान हो इससे कोई विरोध नहीं है। अयोगी गुणस्थानवर्ती परमेष्ठी है, बेबुद के शुध्द, आत्मद्रव्य में अत्यंत आनंद मनाते है। सुक्ष्म काययोग में रहकर पर्वत की तरह स्थिर रहना ही शैलेशीकरण है।

५. वि.सं. १२६३ में धर्मघोषसूरि ने प्राकृत में 'शतपदी' नामक ग्रंथ की रचना की। समाचारी विषयक यह ग्रंथ बहुत गहन होने से महेन्द्रसूरि ने उसकी संस्कृत में सरल आवृत्ति रची। शतपदी के मंगलाचरण पर से जाना जा सकता है की किसी एक आचार्य ने मन में गर्व धारण करके सौ पूर्वपक्ष खडे कियेजिसका धर्मघोषसूरि ने सिध्धांतो का सबूत देकर उचित युक्तियो से तथा सिध्धांतो का आधार लेकर प्रत्युत्तर दिया है। इस ग्रंथ की शैली की रोमन कायदेशास्त्रीयो के पध्धति के साथ तुलना की है। इस ग्रंथ द्वारा धर्मघोषसूरि को अपूर्व कीर्ति प्राप्त हुई। ग्रंथ के अंत